सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 14 ▪ ▪ अंक : 7 ▪ ▪ 5 अक्टूबर 2017 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

सूरिमंत्र की द्वितीय पीठिका
में त्रिभुवनस्वामिनी की
साधना की पूर्णाहुति पर
विनम्र भावेन हार्दिक बधाई...वंदना...
आप साधनामार्ग में निरंतर अग्रसर बनें...

श्री पार्श्वनाथाय नमः

धर्मनगरी बीकानेर समीपवर्ति

गंगाशहर के तुलसी विहार कॉलोनी मध्ये

नवनिर्मित नयरम्य श्री पार्श्वजिनमंदिर के अंजनशलाका-प्रतिष्ठा

महोत्सव प्रसंगे सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण

महोत्सव प्रारंभ
23 नवम्बर 2017
मिगसर सूदि 5

प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त
26 नवम्बर 2017
मिगसर सूदि 7

पावन निश्रा

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि ठाणा

सकल श्रीसंघ से पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक

श्री तुलसी विहार कॉलोनी जैन संघ

तुलसी विहार कॉलोनी,
गंगाशहर (बीकानेर) राज.

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवघायणी।
से कोह लोह भयसा व माणवो, न हासमाणो वि गिरं वएज्जा।

– दशवैकालिक 6/18

क्रोध, लोभ, भय, मान या मजाक में भी साधक सावध का अनुमोदन करने वाली, अन्य का पराभव करने वाली और अन्य का उपघात करने वाली भाषा न बोले।

One should not speak, out of anger, greed, tear, ego or for the sake of humour, such words as may encourage sin, or derogate others or may be instrumental in killing others.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	05
3. नंदिनी पिता	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	06
4. गोत्र का इतिहास	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	08
5. भविष्यवाणी	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	10
6. प्राचीन साहित्य - 5 श्री गौतम स्वामी चौपाई	आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.सा.	12
7. नवपद	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	15
8. समाचार दर्शन	संकलन	16
9. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	26

आगामी कार्यक्रम

दिनांक 11–10–2017 को बीकानेर में
श्री चिंतामणि आदिनाथ मंदिर, श्री भांडासा सुमतिनाथ मंदिर
श्री वासुपूज्य मंदिर श्री कुंथुनाथ मंदिर में
जिन बिम्ब, ध्वज दंड प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 15–11–2017
बीकमपुर (विक्रमपुर) मणिधारी जिनचन्द्रसूरि
जन्मभूमि में जिन मंदिर
दादावाड़ी प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 26–11–2017 को बीकानेर में
बीकानेर तुलसी विहार में
श्री पार्श्वनाथ मंदिर
अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

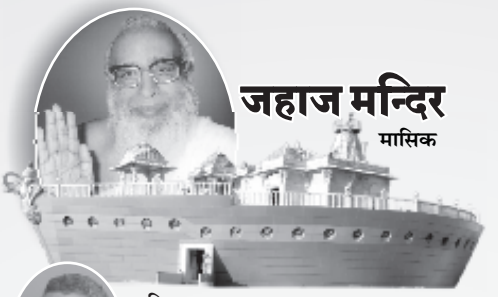

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 07 5 अक्टूबर 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

एक अनुभव पढ़ा था।

किसी ने पूछा था कि इस दुनिया में सबसे ज्यादा झूठा वाक्य कौनसा है, जिसका प्रयोग प्रायः सभी करते हैं?

उत्तर था- मैं मजे में हूँ! जब भी किसी से पूछा जाता है- कैसे हो! तो यही जवाब प्रायः मिलता है।

इस उत्तर पर थोडा विचार करना है। सचमुच यह उत्तर झूठा भी है और अनूठा भी!

ऐसा बोलते समय कौन सोचता है कि सचमुच क्या मैं मजे में हूँ!

मस्तिष्क में सैंकडों चिंताऐं हैं...

शरीर में बीमारियाँ हैं... परिवार में समस्याऐं हैं..... भविष्य की चिंताऐं हैं.... कमी से जूझ रहा हूँ....

फिर भी मैं बोलता हूँ- मजे में हूँ! इसलिये यह उत्तर झूठा है।

अनूठा इस अर्थ में कि चिंताऐं हों या बीमारियाँ, समस्याऐं हों या कल्पनाऐं! यह सब मेरे दुख का कारण है नहीं, हो सकती नहीं। इन्हें मैं अपने आनंद की बाधा नहीं मानता। इसलिये सदा सदा मजे में हूँ। परिस्थितियाँ कैसी भी हो! क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि

1. परिस्थितियाँ मेरी नहीं है।

2. परिस्थितियाँ टिकाऊ नहीं है।

3. परिस्थितियाँ मेरी स्थिति नहीं है।

कोई भी परिस्थिति मेरी नहीं हो सकती। क्योंकि मैं इन सबसे सर्वथा भिन्न हूँ। मैं तो पात्र हूँ। उसमें ठंडा पानी भी हो सकता है। गर्म दूध भी! शीतलता या उष्णता मेरी नहीं है। वह पानी अथवा दूध की है। तो फिर मैं उसके कारण क्यों ठंडा या गर्म बनूं। कोई भी परिस्थिति स्थायी नहीं होती। स्थायी तो स्वभाव ही होता है। वही मेरी स्थिति है।

सच्चाई यह है कि आनंदित रहना हर चेतना का अबाधित अधिकार है। पर हमारी मानसिकता ही इस अधिकार से हमें वंचित रखती है।

अचरज इस बात का होता है कि हम हमेशा अपनी चिंता या अपने दुख का कारण सदा सदा दूसरों को ही मानता आये हैं। दूसरों पर दोषारोपण करना बहुत आसान होता है। मैं अपने बचाव का इसे बहाना बना लेता हूँ।

मेरे दुख का कारण मेरी मानसिकता है। और सुख का कारण मेरा स्वभाव है। इस सूत्र को पूर्णता के साथ हृदयंगम कर लेना है।

गुरुदेव की कहानियाँ

करुणा

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

'गुरुदेव! काफी समय हो चुका है, अध्ययन करते-करते, अब हम घर जाना चाहते है।' तीन विद्यार्थियों ने अपने गुरु के समक्ष प्रार्थना की।

नालन्दा विद्यापीठ में तीनों छात्र अर्से से पढ रहे थे। कुलपति वृद्ध थे। वे केवल किताबी ज्ञान हीं नहीं सिखाते थे अपितु जीवन जीने की कला भी बताते थे।

वे सोच रहे थे, मैं अपने अनुभवों और ज्ञान की पूंजी किसी योग्य शिष्य को सौंप दूँ तो निश्चित हो जाऊँ। अभी तक उनकी पैनी आँखों ने कोई निर्णय नहीं किया था। आज कुलपति ने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया।

शाम का समय था। कुलपति ने उन्हें घर जाने की अनुमति प्रदान की। अपने-अपने झोले उठाकर तीनों विद्यापीठ से बाहर हो गये।

जिस मार्ग से उन्हें जाना था, थोड़ी दूर पर जाकर देखा तो पता चला कि रास्ते में कांटे बिखरे पड़े हैं।

उन तीनों छात्रों में से एक नें ज्योंहि कांटो को देखा तो बड़ा झुंझलाया। उसने उन कांटो पर से छलांग लगाई और दूसरी ओर निकल गया। दूसरे छात्र ने कूदने में अपने आपको असफल समझकर उस रास्तें को ही छोड़ दिया और घूमकर आगे बढ़ गया।

तीसरा छात्र न तो कूदा, न बाजु से निकला, वह वहीं थोड़ी देर खड़ा रहा, कुछ सोचा, निर्णय किया। उसने अपना झोला एक ओर रखा। कुछ तिनके इकठ्ठे कर उन कांटो को साफ करने लगा।

दूसरी ओर खड़े उन दोनों छात्रों ने कहा- 'अरे! तुम यह क्या करने बैठे हो?देर हो रही है, अंधेरा हो जायेगा।'

तीसरे छात्र ने उत्तर दिया- 'अन्धेरा हो जाय मुझे इसकी चिंता नहीं है। पर चूंकि अपने उजाले में आये इस कारण से कांटे नजर आ गये। अंधेरे में जो आयेंगे, वे तो कांटो को नहीं देख पायेंगे और उन्हें चुभ जायेंगे। इसी कारण मैं ये कांटे हटा रहा हूँ। आपको देरी हो रही है तो आप जाओ, मैं तो यह कार्य करके ही आऊँगा।'

'शाबास वत्स'! नजदीक के झोंपड़े से बाहर निकलने हुए कुलपति ने कहा। उनकी आंखों में हर्ष लहरा रहा था। उनके शब्दों में आनन्द नाच रहा था। वास्तव में कुलपति ने ही कांटे बिछाये थे ताकि छात्रों की परीक्षा की जा सके।

कुलपति ने कहा- 'वत्स! तूं ही मेरे कोष का अधिकारी है, क्योंकि तेरे पास करूणा से छलकता हृदय है।'

हित की बात बताई तो बुरे हो गये
असत्य को काटा तो हम छुरे हो गये
विश्वास का गला हम घोट नहीं सकते
ज्ञान पाकर के हम तो अब खरे हो गये।।

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

नंदिनीपिता

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

श्रमण अर्थात् साधु और श्रमणोपासक अर्थात् श्रमण-साधु की पर्युपासना, सेवा एवं सुश्रुषा करने वाला।

परमात्मा महावीर के जीवन काल में दस श्रावक विशिष्ट रूप से प्रसिद्ध हुए, जिनके नाम आगम वाणी के स्वर्णिम पन्नों पर भी अंकित हैं। उसमें से नौवें श्रावक शिरोमणि थे-नंदिनीपिता।

श्रावस्ती नगरी के नंदन नंदिनीपिता श्रेष्ठी के रूप में विख्यात थे। बारह करोड़ स्वर्णमुद्राओं के स्वामी थे, जिनमें से चार करोड़ व्यापार में अभिवृद्धि कर रही थी। चार करोड़ ब्याज में थी और चार करोड़ निधान के रूप में स्थापित थी।

इतना ही नहीं, चार गोकुलों में गोरस अमृत की भाँति झरता था। इन सभी में यदि चार चाँद लगाने वाली कोई बात थी तो वह थी सौन्दर्य और सद्‌गुण की प्रतिमा धर्मपत्नी अश्विनी।

एक दिन श्रावस्ती की धरा का भाग्योदय हुआ। आगमन हुआ श्री महावीर स्वामी का! खुशी की लहर छा गयी चिहुँदिशि में!

नयनरम्य समवसरण की रचना देव-देवेन्द्रों ने की।

वायुकुमार देवों ने भूमि शुद्धि की।

मेघकुमार देवों ने सुगंधित जल का छिड़काव किया।

ऋतु देवता ने विविध मनभावन पुष्पों की वृष्टि की।

व्यंतर देवों ने रत्न व स्वर्णमयी शिलाओं से पृथ्वी को शोभित किया।

व्यंतर देवों ने स्वर्ण सिंहासन स्थापित किया।

प्रभु समवसरण में पधारे।

इधर श्रावस्ती नगरी का विशाल राजमार्ग भी संकड़ा हो गया। खुशियाँ समा नहीं रही थी मन मन्दिर में। जिसने भी प्रभु का आगमन जाना, छोड़े संसार के काम और चला प्रभु के दरबार।

नंदिनी पिता भी वैसे ही खींचे चले आये देवादिधेव के दिव्य दरबार में, जैसे हरिण संगीत दिशा में खींचा चला जाता है।

समवसरण का मनोरम दृश्य देखकर जैसे उसकी आँखें ही नहीं, हृदय भी ठहर गया।

रजत का पहला वलय जिस पर सोने के कंगूरे चमक-दमक रहे थे।

स्वर्ण का दूसरा वलय, जिस पर रत्नों के कंगूरों की शोभा-आभा ही कुछ अलग थी।

रत्नों का तीसरा वलय, जिस पर मणियों के कंगूरे अत्यन्त न्यारे-प्यारे प्रतीत हो रहे थे।

उनकी आभा-प्रभा से चारों दिशाएँ आलोक से भर गयी थी।

वह समवसरण की बीस हजार सीढ़ियाँ सहज ही चढ़ गया। यह परमात्मा का ही दिव्य प्रभाव था। उनका यह अतिशययुक्त पुण्योदय था।

हाथ जोड़े खड़े थे देवेन्द्र।

विनयावनत थे देव-देवी।

करबद्ध मस्तक झुकाएँ उपस्थित थे नर-नरपति! अग्रमहिषीयाँ भाव विभोर होकर प्रभु के आगे नृत्य करके भव-नृत्य का समापन कर रही थी।

यह स्वर्ग है या मनुष्य लोक? मैं कहाँ आ गया हूँ। पर ज्योंहि प्रभु का अमृत से छलकता मुखमंडल देखा-हृदय परम शान्ति और मैत्री से भीग गया। वह हाथ जोड़े खड़ा था प्रभु के सम्मुख!

प्रभु के मुख से धर्म देशना के पुष्प बिखरने लगे।

संसार के सारे कामभोग विष और शल्य रूप है एवं दु:खों की खान है! इन्द्रिय-विषयों में रति-अरति का संवेदन क्षणिक, नश्वर और चंचल है। वह अन्ततोगत्वा दुर्गति में ले जाने वाला है। संसार के सारे सुख-साधन-प्रसाधन किंपाक फलवत् दिखने में सुन्दर है, उपभोग में मनोरम है, तथापि मारने वाले हैं।

नंदिनीपिता की आत्मा में मिथ्यात्व की घनी रजनी छँटी और समकित की चाँदनी बिखरी।

उसने प्रार्थना की-प्रभो! मुझे तारो! संसार से उबारो! भवोदधि से पार उतारो!

प्रभु के होंठ हिले-अपना लक्ष्य जानो वत्स!

नंदिनीपिता बोले-भन्ते! मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन में कोई सन्देह नहीं है। नि:शंक हूँ जिनोक्त तत्त्व में।

मेरी यह अटल मान्यता है कि संसार कंटकवन है और संयम नन्दनवन है।

छोड़ने जैसा है संसार!

लेने जैसा है संयम!

पाने जैसा है सिद्धत्व!

परन्तु प्रभो! मैं संयम पथारूढ़ होने में अक्षम हूँ। मुझे श्रावक-जीवन के बारह व्रत प्रदान कीजिये।

जय-जयकार की अनुमोदना ध्वनि के मध्य प्रभु से उसने श्रावक जीवन की अनुपमेय सम्पदा स्वरूप बारह व्रत स्वीकार किये। तत्पश्चात् पूरे परिवार ने प्रभु के समक्ष श्रावक जीवन अंगीकार किया!

साधना का जीवन...त्याग का राग...भक्ति की युक्ति... प्रभु की पर्युपासना!

नंदिनीपिता को अब भोग-उपभोग तुच्छ प्रतीत होने लगे।

संसार कारागृह की भाँति कचोटने लगा।

परिग्रह और आरम्भ-समारम्भ मन को सताने लगे।

वर्षों के बाद उस आनंद-कामदेवादि की भाँति प्रतिमा-आराधना के नूतन मनोरथ को निर्विघ्न पूर्ण करके साधना के सोपान तय किये।

अन्त समय में अनशन की आराधना करके समाधिमृत्यु प्राप्त कर प्रथम सौधर्म देवलोक में ऋद्धि सम्पन्न देव बने! देवायु पूर्ण होने पर वे महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेंगे और संयम-साधना करके अखण्ड आत्मानंद के स्वामी बनेंगे।

हार्दिक श्रद्धांजली

जसोल निवासी स्व. श्रेष्ठिवर्य श्री मोहनलालजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी सुश्राविका उमरावदेवी गोलेच्छा का 20 सितम्बर 2017 को अहमदाबाद नगर में स्वर्गवास हो गया।

हमारे जहाज मंदिर के ट्रस्टी एवं जसोल खरतरगच्छ संघ के आगेवान श्रावक श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा की आप माताजी थे।

इस अवसर पर संवेदना संदेश प्रेषित करते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा– श्रीमती उमरावदेवी एक परम धार्मिक सुश्राविका थी। नित्य सामायिक आदि के उनके नियम थे। आपको मातृवियोग का अपार कष्ट सहना पड रहा है। ऐसे समय में परमात्मा महावीर की देशना का श्रवण कर अपने मन को धीरज दें।

जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

बीकानेर निवासी वर्तमान में दिल्ली वासी समाज के आगेवानी सुश्रावक श्री हीरालालजी मुसरफ का ता. 2 अक्टूबर 2017 को स्वर्गवास हो गया।

खरतरगच्छ समाज के आगेवान श्रावक प्रवर श्री मुसरफजी कई संस्थाओं से जुडे हुए थे। उनके स्वर्गवास से समाज व गच्छ में बहुत बड़ी क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति असंभव है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

गोत्र इतिहास

बाफना / नाहटा आदि गोत्रों का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

गोत्रों की वंशावली प्रबंधों में यह वर्णन मिलता है कि बाफना गोत्र उन अठारह गोत्रों में से एक हैं, जिसकी स्थापना आचार्य रत्नप्रभसूरि द्वारा की गई थी।

इतिहास की कसौटी पर यह वृत्तान्त स्पष्टत: स्वीकृत नहीं है। क्योंकि इन गोत्रों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 11वीं या 12वीं शताब्दी से पूर्व की होने का कोई भी साक्ष्य/प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

बाफना गोत्र का इतिवृत्त इतिहास के प्राचीन पन्नों पर इस प्रकार प्राप्त होता है।

मालव प्रदेश के धार नगर की माटी से इस गोत्र का संबंध ज्ञात होता है। पंवार वंश के पृथ्वीधर/पृथ्वीपाल राजा का राज्य था। उनकी सोलहवीं पीढी में जीवन और सच्च नामक दो राजकुमार हुए। किसी कारणवश उन्होंने धार राज्य का त्याग किया और मारवाड आये। जालोर के राजा से घोर युद्ध हुआ। कन्नोज के राजा जयचंद से इन्हें सहयोग मिला। पर युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकला। वर्षों तक युद्ध चलने पर भी जय पराजय नहीं हुई। इस बीच उधर विचरण कर रहे खरतरगच्छ के आचार्य भगवंत श्री जिनवल्लभसूरि का साक्षात्कार हुआ। अपनी नम्र प्रार्थनाऐं उनके चरणों में अर्पित की। धर्म का रहस्य-बोध प्राप्त कर श्रावक जीवन अंगीकार करने का भाव प्रकट किया। गुरु महाराज ने उन्हें बहुफणा पार्श्वनाथ का शत्रुंजय-शत्रुविजेता मंत्र दिया। साधना की विधि बताई। एकाग्र मन से किये गये जाप का परिणाम प्रकट हुआ। शत्रु सेना में खलबली मच गई। शत्रु सेना पर विजय प्राप्त कर ली।

कुछ वर्षों बाद अपने उपकारी आचार्य भगवंत के दर्शन की प्यास लिये उपाश्रय गये तब पता चला कि उनका तो स्वर्गवास हो गया है। उनके पट्ट पर आचार्य जिनदत्तसूरि बिराजमान है। उनकी महिमा सुन कर उनके पास पहुँचे।

दादा गुरुदेव से तत्वबोध प्राप्त कर विधि पूर्वक श्रावक धर्म स्वीकार कर लिया। वि. सं. 1177 में वे जैन श्रावक बने। चूंकि उन्होंने बहुफणा पार्श्वनाथ के

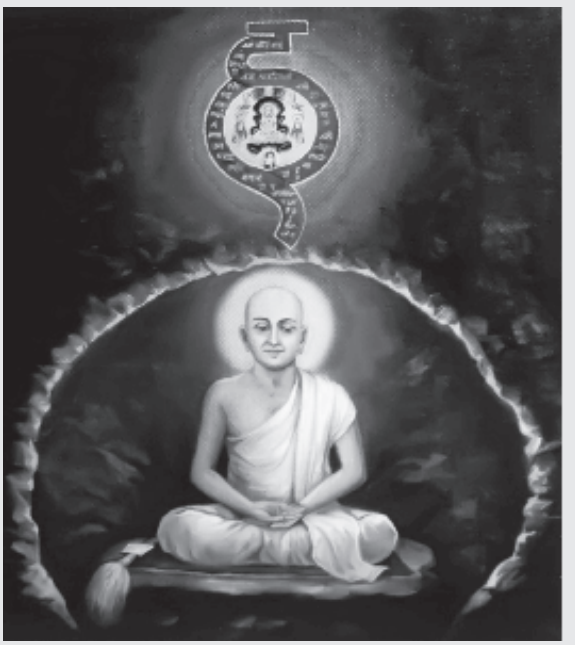

मंत्र की साधना से विजय प्राप्त की थी। इस कारण गुरुदेव ने उन्हें बहुफणा/बाफना/बापना गोत्र प्रदान किया।

खरतरगच्छ की बेगड शाखा के आचार्य जिनचन्द्रसूरि बीकानेर के बाफना गोत्र के श्रेष्ठि श्री रूपजी की धर्मपत्नी रूपादेवी के पुत्र थे। आचार्य जिनकृपाचन्द्रसूरि भी इसी बाफना गोत्र के गौरव थे, जिन्होंने क्रियोद्धार करके शुद्ध समाचारी को स्वीकार किया था।

इस गोत्र के अनेक श्रावक रत्नों ने जिन शासन की अपूर्व शासन प्रभावना की। जैसलमेर के बाफना (पटवा) परिवार ने उल्लेखनीय कार्य किये हैं। इस परिवार द्वारा जैसलमेर आदि कई स्थानों पर जिन मंदिरों का निर्माण करवाया गया। जैसलमेर स्थित पटवों की हवेलियाँ विश्व में विख्यात हैं। अमरसागर तीर्थ का मंदिर इसी बाफना परिवार की भक्ति का प्रतीक हैं। जिसकी बारीक कोरणी आँखों को तृप्त बना देती है।

वि. सं. 1891 में खरतरगच्छाचार्य श्री जिन महेन्द्रसूरिजी म. सा. की निश्रा में इसी बाफना परिवार के सेठ

श्री देवराजजी बहादुरमलजी आदि ने जैसलमेर से शत्रुंजय तीर्थ हेतु विशाल संघ का आयोजन किया था। इस संघ में सभी गच्छों के आचार्यों, साधुओं को निमंत्रित किया गया था। चौरासी गच्छों के कुल इक्कीस सौ साधु साध्वी इस संघ में सम्मिलित थे।

राजपुताना के कई राज्यों के खजाने का कार्य बाफना परिवार करता था। एक तरह से वे स्वयं राजा थे। उदयपुर, कोटा, रतलाम, झालरापाटन, छोटा शहर आदि कई नगरों में अपने व्यापार का विस्तार किया। बाफना परिवार की यह विशेषता रही है कि वह अपना मकान बाद में बनाता, दादावाडी पहले बनाता। उदयपुर, रतलाम, कोटा, भीलवाडा आदि कई स्थानों पर इसी बाफना परिवार द्वारा विशाल भूखण्ड लेकर अपने इष्ट दादा गुरुदेव को बिराजमान किया गया। कर्नल टॉड ने अपने ग्रन्थ में सेठ जोरावलमलजी बाफना की बडी प्रशंसा की है। एक समय मेवाड रियासत सेठ जोरावरमलजी के पास गिरवी थी। वे ही राज्य का पूरा संचालन करते थे। इसी परिवार के रायबहादुर सिरेमलजी बाफना सन् 1926 में इन्दौर राज्य के प्राइम मिनिस्टर बने। इसी बाफना परिवार के श्री सुन्दरलालजी पटवा बडे राजनेता रहे। जिन्होंने मध्यप्रदेश के सफलतम मुख्यमंत्री के रूप में अपना योगदान दिया।

नाहटा

नाहटा, बहुफणा गोत्र की मुख्य शाखा है। जीवन और सच्च के 34 पुत्र थे। इनमें सामंत नामका पुत्र श्रेष्ठ वीर था। इनका पुत्र जयपाल पृथ्वीराज की सेना में सेनापति था। उसके नेतृत्व में काबुल के बादशाह की सेना से छह बार युद्ध हुआ। और विजय प्राप्त की।

जयपाल के युद्ध के मैदान में पीछे नहीं हटने के कारण पृथ्वीराज ने इन्हें 'ना हटा' का बिरूद दिया। इस प्रकार बहुफणा गोत्र में नाहटा गोत्र/शाखा का उद्‌भव हुआ।

नाहटा गोत्र में कितने ही विशिष्ट व्यक्तित्वों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से जिन शासन व राष्ट्र को गौरवान्वित किया। सेठ मोतीशाह का नाम अत्यन्त आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है। वे इसी नाहटा गोत्र के वंशज थे।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ पर बनी सेठ मोतीशा टूंक उनके प्रबल पुरूषार्थ व परमात्म भक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कुंतासर की गहरी खाई को पाट कर इस मंदिर का निर्माण किया गया था। इस खाई को भरवाने का जब निर्णय किया था, तो सेठ मोतीशा के सभी परिजनों, स्वजनों, मित्रों ने इन्कार करते हुए सुझाव दिया था कि यह संभव नहीं है। पर सेठ मोतीशा के दृढ़ निश्चय ने असंभव को संभव किया। इस मंदिर के निर्माण में 1100 कुशल कारीगरों के साथ तीन हजार मजदूरों ने लगातार सात वर्ष तक कार्य किया था।

भायखला का विशाल मंदिर एवं दादावाडी सेठ मोतीशा व उनके पुत्र खीमचंदजी ने ही निर्मित की थी। सेठ मोतीशा स्थान स्थान पर जिन मंदिर एवं दादावाडियों का निर्माण कराया था। चेन्नई में विशाल दादावाडी का भूखण्ड सेठ मोतीशा ने ही अर्पण किया था।

मुंबई में पांजरापोल खोल कर जीवदया का अनूठा कार्य उन्होंने किया था। मुंबई का प्रसिद्ध लालबाग सेठ मोतीशा ने ही निर्मित किया था।

नाहटा गोत्र के श्री अगरचंदजी नाहटा व भंवरलालजी नाहटा साहित्य व इतिहास जगत के कोहिनूर रत्न हैं। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण, संवर्धन, इतिहास लेखन को अर्पित किया था। गच्छ के इतिहास को वर्तमान में प्रकाश में लाने का श्रेय नाहटा बंधुओं को जाता है।

इसी वंश के स्वनामधन्य श्री हरखचंदजी नाहटा ने गच्छ व शासन के लिये प्रबल पुरूषार्थ किया।

इस बाफना गोत्र से समय समय पर अन्य शाखाऐं/उपगोत्र निकले। जो बाद में गोत्र के रूप में ही जानी जाने लगी। कुल 37 शाखाओं का उद्‌भव बाफना गोत्र से हुआ।

1. बापना 2. नाहटा 3. रायजादा 4. थुल्ल 5. घोरवाड़ 6. हुण्डिया 7. जांगडा 8. सोमलिया 9. वाहंतिया 10. वाह 11 मीठडिया 12. वाघमार 13. आभू 14. धतुरिया 15. मगदिया 16. पटवा 17 नानगाणी 18 कोटा 19. खोखा 20. सोनी 21. मरोटिया 22. समूलिया 23. धांधल 24. दसोरा 25. भुआता 26. कलरोही 27. साहला 28. तोसालिया 29. मूंगरवाल 30. मकलबाल 31. संभूआता 32. कोचेटा/कोटेचा 33. नाहउसरा 34 महाजनिया 35. डूंगरेचा 36. कुबेरिया 37. कुचेरिया 38. बेताला 39. मारू 40. खोडवाड 41. कलरोही आदि

भविष्यवाणी

भविष्यवाणी

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

परमात्मा महावीर की सोलह प्रहर की अखण्ड देशना चल रही थी। उस देशना के बीच सम्राट् पुण्यपाल आया है और स्वयं के द्वारा देखे गये आठ सपनों का फलितार्थ पूछा है। परमात्मा ने परिषद् के बीच उन स्वप्नों का फल बताया है। परमात्मा महावीर के ये शब्द वर्तमान काल में कितने सटीक लागू होते हैं। यह इस विवेचन से स्पष्ट है।

'प्रभो! आज मैंने रात्रि के अन्तिम प्रहर में अत्यन्त स्पष्ट आठ स्वप्न देखे हैं। मैं उनका अर्थ नहीं समझ सका हूँ। आपके श्रीमुख से उनका अर्थ सुनकर तृप्त बनूंगा देव!'

'देवानुप्रिय! तुम्हारे ये स्वप्न भविष्य काल की कटुता के परिचायक हैं। आने वाले समय की कठोरता के प्रतीक हैं। एक वाक्य में इसका सीधा सा अर्थ है – अनागत काल का व्यक्ति क्रमशः निःसत्व होकर धर्म के राजमार्ग से पतित होगा और अधर्माभिमुख होकर गिरता चला जायेगा।'

यह संवाद चल रहा था भगवान महावीर और राजा पुण्यपाल के बीच!

'प्रभो! ऐसा परिणाम श्रवणकर मैं बहुत ही आर्त्त हुआ हूँ। मैं अपने आपको अत्यन्त पुण्यशाली मान रहा हूँ आपके चरणों का संस्पर्श पाकर! आपकी सानिध्यता में मुझे जीवन मिला! जीवन का रहस्य मिला! प्रभो! अनुग्रह कर फरमायें कि मैंने जो आठ स्वप्न देखे हैं – उनका विशद अर्थ क्या होगा?

जिज्ञासा श्रवण कर परमात्मा ने कैवल्य के आलोक में राजा के देखे स्वप्न देखे! भविष्य जगत् को निहारा। होंठ हिले और भविष्यवाणी में गूंथी स्वर लहरी बहने लगी। शब्दों का अनवरत प्रवाह नया जानने की उत्सुकता भी पैदा कर रहा था तो समाधान की तृप्ति भी प्रदान कर रहा था।

'देवानुप्रिय! तुमने देखा है पहले स्वप्न में हाथी को!' वह हाथी उत्तम गजशाला छोड़कर जीणशीर्ण शाला के प्रति मोहासक्त हो गया है। यह स्वप्न श्रावकों के भविष्य का पहला पन्ना है। धीरे–धीरे श्रावक वर्ग अपनी मर्यादा त्याग देगा। हाथी जैसे श्रावक हैं और गजशाला जैसा चारित्रभाव है, जीर्ण शाला जैसा गृहवास है। श्रावक वर्ग शनैः शनैः गृहवास के प्रति विरक्ति के स्थान पर आसक्ति की बेडियों में फंसता जायेगा। संसार के कीचड़ में धंसता जायेगा। संयम के प्रति अरूचि होगी। कंचन और कामिनी ही केन्द्र बन जायेंगे। और इनके लिये जीवन की बाजी लगाकर दौडने के लिए तत्पर बनेगा।

राजन्! तुमने बन्दर की कुचेष्टाओं को दूसरे स्वप्न में निहारा है। इसका परिणाम बडा ही गंभीर दिखता है। बन्दर निःसत्व का प्रतीक है। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि बन्दर जैसे सत्वहीन पुरुष साधु अथवा श्रावक धर्म स्वीकार तो कर लेंगे परन्तु उनके प्रति वफादार नहीं होंगे। बन्दर की तरह कुचेष्टा करके संयम के तेज को आभाहीन कर देंगे। साधु तो बनेंगे पर संयम में शिथिलता आयेगी। श्रावक तो हो जायेंगे पर श्रावकत्व का क ख ग भी उन्हें पता नहीं होगा। धर्म को अपने सदाचरण के द्वारा सुरक्षित नहीं करेंगे किन्तु विकृत विचार धारा और धर्महीन आचरणों से धर्म को बदनाम करेंगे।

–ओह!

–यों गलगले मत बनो। धीरज से सुनो! हालांकि जो होने वाला है। मैं उसे पूर्णता के साथ नहीं सुना सकता। अमावस्या के अधंकार की एक झलक मात्र दिखा रहा हूँ।

–प्रभो! मैं द्रवित हो गया हूँ, यह सुनकर कि लोग जान बूझकर रत्न को छोड़कर कांच के टुकडों को तिजोरी में रखेंगे!

–राजन्! अब तुम अपने तीसरे स्वप्न का परिणाम सुनो। कल्पवृक्ष को कंटीली झाडियों ने अपने कब्जे में कर लिया है। यह स्वप्न सुनने में ही कितना पीड़ाकारक लग रहा है। कल्पवृक्ष जैसा है – धर्म और कंटीली झाडियाँ हैं – वेशधारी, शिथिलाचारी साधु और धर्महीन होने पर भी धार्मिक होने का ठप्पा लगा कर घूमते श्रावक! ऐसे वेशधारी साधु व श्रावक धर्म को अपने कब्जे में लेकर मनचाही व्याख्या करेंगे। आगमों के वचनों के साथ

तोडफोड़ करेंगे। अपना–अपना गुट बनाने व बढ़ाने के चक्कर में माया और कपट का हथियार आजमायेंगे। अपने यश और कीर्त्ति के लिये श्रावकों की पगचंपी करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करेंगे। क्या दशा होगी धर्म की?

देवानुप्रिय! तुमने चौथा सपना तो बड़ा ही विचित्र देखा है। एक कौआ शुद्ध सुगंधित और मधुर नीर से भरी वापिका को छोडकर किसी खाबोचिये में बहुत दिनों का जमा गंदा पानी पी रहा है। बडी दुःखदायी बात है। जानकर भी अनजान बनना! आंखें होने पर भी अन्धा होना! हाँ! आने वाला समय ऐसा ही होगा। साधु भी ऐसे होंगे। श्रावक भी ऐसे ही होंगे। यह तो तुमने मेरी देशना में सुना ही होगा कि साधु की क्या मर्यादा है?साधु कभी भी अकेला नहीं रह सकता। समुदाय में रहना अनिवार्य है। परन्तु साधु कौए की तरह शुद्ध समुदाय का त्याग करके स्वतंत्र/स्वछंद होकर एकल विहारी बनेंगे। श्रावक भी ऐसे स्वछंद एकल विहारी निष्कासितों की सेवा/पूजा में धर्म समझेंगे। उन्हें विभूषित करेंगे। शुद्ध मर्यादा का लोप करेंगे। अपनी वाहवाही के लिये तंत्र, मंत्र, यंत्र का प्रयोग करेंगे। अनेक प्रकार की पाप क्रियाएं करेंगे। समुदाय में अन्य श्रमणों के साथ रहने में परतंत्रता का अनुभव करेंगे और इस कारण लड–झगड कर, एक दूसरे की त्रुटियाँ बताकर स्वतंत्र विचरण में आनंद का अनुभव करेंगे। तप, जप, क्रिया सब दिखावटी हो जायेगी।

देवानुप्रिय! पांचवां स्वप्न 'घर का भेदी लंका ढहाये' की कहावत को चरितार्थ करने वाला परिणाम प्रकट करता है। सिंह के शव में कीड़े पडे देखे। सिंह के पराक्रम का सत्व है। सोता हो चाहे जागता, उसके पास जाने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता। सिंह के कलेवर को भी देखकर बिचारे सियाल भाग जाते हैं। मगर उस कलेवर को उसमें पड़े कीड़े ही खोखला कर डालते हैं। वैसे ही यह जिन शासन/जिन धर्म का सिंह है। अन्य मतावलंबी उसे कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। मगर उसी के कीड़े अर्थात् नामधारी जैन साधु/श्रावक उसे नुकसान पहुंचायेंगे। वे जिन शासन अथवा निज चेतना के रागी नहीं बल्कि अपना नाम, यश आदि के ही आराधक होंगे। और अपने नाम की सिद्धि के लिये वे कुछ भी करने के लिये तैयार रहेंगे। धर्म–अधर्म शब्दों और शास्त्रों में ही दिखाई देंगे।

राजन्! कमल तो तालाब में ही उत्पन्न होता है। मगर उकरडे (घृणित कचरा) में उगते हुए कमल को छट्ठे स्वप्न में तूंने देखा है! यह प्रतीक बड़ा गहरा है। इसका अर्थ यह है कि आने वाले समय में उच्च कुल का व्यक्ति भी निम्न स्तर के कार्य करेगा। धन कमाने के लिये वह क्रिया की उत्कृष्टता या निकृष्टता पर कोई विचार नहीं करेगा। साध्य उसका केवल पैसा होगा। मगर इस साध्य सिद्धि में साधन शुद्धि का कुछ भी विचार नहीं करेगा। आहार, विहार, आचरण आदि के विषय में कुछ भी चिंतन नहीं करेगा। कुलाचार, धर्माचार सब औपचारिक हो जायेंगे।

देवानुप्रिय! बीज वहीं बोये जाते हैं, जहाँ उपज अच्छी हो सके। खारी, पथरीली, ऊसर भूमि में बोये जाने से बीज निष्फल हो जाते हैं। समझदार व्यक्ति बीज बोने से पहले भूमि की उत्कृष्टता निहारता है, मगर सातवें स्वप्न में तुमने ऊसर भूमि में बीजवपन देखा है। यह स्वप्न पांचवें आरे की दान प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। धनवाल लोग दान तो करेंगे मगर पात्र परीक्षा में निष्फल हो जायेंगे। सुपात्र दान ही सच्चा दान है। कुपात्र दान अनेक अनर्थों को जन्म देता है। लेकिन नाम के मोह में उलझकर पात्र–कुपात्र का विचार नहीं करेंगे।

राजन्! समय की बलिहारी का भाव प्रकट करता हुआ तुमने आठवां और अन्तिम सपना देखा है। सोने के कलश मैले हो गये! बहुत विचारणीय है यह स्वप्न और उसका फल! सोने के कलश का अर्थ है आत्मार्थी साधु! वे भी मैले हो जायेंगे अर्थात् व्रतों में अतिचार का सेवन करेंगे। सम्पूर्ण शुद्ध साधुत्व के दर्शन दुर्लभ होंगे। आलस्य, प्रमाद में समय बीतेगा। विकथा की प्रबलता दिखेगी। राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा और भोजन कथा में ही मग्न दिखाई देंगे। दृढ़ संकल्प के अभाव में भाव संयम की अनुपस्थिति होगी। स्वाध्याय और ध्यान पक्ष की कमजोरी के कारण संयम च्युत होंगे। जो साधु क्षमा का उपदेश देंगे, वे ही शासन के टुकडे करेंगे। साधना घटेगी और आडम्बर बढेगा। आगम अभ्यास गौण हो जायेगा। पद लिप्सा बढेगी। योग्यता गौण हो जायेगी।

परमात्मा भगवान महावीर फरमाते रहे।

सारी सभा सुनती रही।

पुण्यपाल राजा थोड़ा विचलित जरूर हुआ पर भावि भाव कभी अन्यथा नहीं होता, सोचकर उसने संतोष धारण किया। श्रोता यह सोचकर पुलकित बने कि हम महावीर के युग में है। उस युग में नहीं जिसकी पीडाकारी विवेचना अभी अभी सुन रहे थे।

प्राचीन साहित्य - 5

उपाध्याय श्री लक्ष्मीकीर्ति महाराज विरचित

श्री गौतम स्वामी चौपई

संपादक– मणिगुरु चरणरज
आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.

कृति परिचय

गुरु गौतमस्वामी का नाम जिनशासन में अत्यंत श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। वे एक ऐसे आदर्श–पुरुष हैं जिन पर आज तक सहस्रों लेखकों ने अपनी लेखनी को गतिमान कर पवित्र किया है।

जिनके नाम का स्मरण कर लब्धि की याचना की जाती है, तो समर्पण और विनय गुण को प्राप्त करने हेतु प्रतिदिन ध्यान किया जाता है।

सूरिमंत्र की साधना में प्रथम पीठिका के रूप में श्री गुरु गौतमस्वामी की आराधना की जाती है।

वर्तमान समय में गौतम स्वामी की अतिप्रसिद्ध कृतियों में खरतरगच्छाचार्य यशःपूंज तृतीय दादागुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज के शिष्य उपाध्याय भगवंत श्री विनयप्रभजी महाराज ने गुरु गौतमस्वामी के रास का निर्माण किया। जिसका कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा के मंगल प्रभात में महामांगलिक के रूप में श्रवण करवाया जाता है।

प्रस्तुत कृति उन्हीं विनयप्रभोपाध्याय की परंपरा में हुए उपाध्याय लक्ष्मीकीर्तिजी महाराज की है। जिसमें गुरु गौतमस्वामी की सुंदर भावों को गुंफित कर अनेक विशेषणों के द्वारा स्तुति की गई है।

प्रारंभ में जन्म स्थान, माता–पिता का नाम आदि को बताकर वेद–पुराण आदि में पारंगत बनने का कथन किया है। पुनः समवसरण में त्रिपदी का श्रवण कर पूर्व और द्वादशांगी का निर्माण की घटना को सरस रूप में गेय बनाया है। पश्चात् अष्टापद यात्रा का वर्णन कर तापसों की दीक्षा, पारणा करवाने की बात कर उन्हें दातार बताया हैं।

ग्यारहवीं गाथा में स्वयं के हाथों से जिसे दीक्षा प्रदान करते हैं वे केवलज्ञानी बनते हैं, बताया है।

किस विधि से गुरु गौतमस्वामी का जाप करना? उसके लिए बताया है–

तंदुल अक्षित करि भरि थाली, अथवा पीली करि जपमाली।
व्रत करिजे दीवाली दिवसै, गौतम जप करि बारह सहसै।।22।।

जो भव्य जीव गुरु गौतमस्वामी का जाप–ध्यान करता है उसे जीवन में अंतराय आदि दूर होते हैं और सुंदर भोजन के साथ मनवांछित सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

मध्य की गाथाओं गुरु गौतमस्वामी की सेवा में कितने देवी, देवता, यक्ष आदि रहते हैं उनका विशद वर्णन हैं।

भव्य जीवों के उपकार के लिये प्रस्तुत कृति का निर्माण किया गया है, जिसे गुरु गौतमस्वामी के समक्ष प्रार्थना के रूप में गायन कर सकते हैं।

कृति परिचय

श्री खरतरगच्छ की क्षेमकीर्ति शाखा में पूज्य उपाध्याय लब्धिमंडणजी महाराज के शिष्य प्रवर उपाध्याय श्री लक्ष्मीकीर्तिजी महाराज हुए। आप विद्वान् व श्रमणश्रेष्ठ थे।

खरतरगच्छ साहित्य कोश के अनुसार आपके द्वारा रचित साहित्य में श्री गौतम स्वामी चौपई के अतिरिक्त नवकार फल गीत और पार्श्वजिन स्तवन ही प्राप्त होते हैं।

आपकी शिष्यों में कल्पसूत्र व उत्तराध्ययन सूत्र के टीकाकार, समर्थ विद्वान् उपाध्याय श्री लक्ष्मीवल्लभजी महाराज हुए। जिन्होंने मरुगुर्जर भाषा में भी अनेक कृतियां का सर्जन किया।

प्रति परिचय

आचार्य कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर कोबा के हस्तलिखित संग्रह से प्रस्तुत कृति की हस्तलिखित

प्राचीन प्रति प्राप्त हुई है। ज्ञानमंदिर की संख्या 39873 पर यह प्रति संरक्षित है। संभवतः 300 से अधिक वर्ष प्राचीन इस प्रति में दो पत्र है। अक्षर स्पष्ट है। प्रतिलिपि प्रदान करने हेतु ज्ञानमंदिर के संचालक गण साधुवादार्ह हैं।

उपाध्याय श्री लक्ष्मीकीर्ति महाराज विरचित
श्री गौतम स्वामी चौपई

श्रुतदेवी पद पंकज प्रणमी, सुपसाय लही सुभ वचन अमी।
श्री गोतमगुरु ना गुण गावुं, मनवंछित सुख संपत्ति पाऊं।।1।।
धण वर गुव्वर नामे गामे, ब्राह्मण वसुभूति इसइ नामइ।
पृथिवी नामइ तेहनइ घरणी, तन सील सुजस शोभा धरणी।।2।।
तेहनइ इंद्रभूति सुपूत्र थयो, गोतमगोत्री जगमां ही जयो।
अतिरूप अनंग भणी जीपै, तेजै कर दिनकर जिम दीपै।।3।।
स्मृति वेद पुराण षडंग ग्रह्या, व्याकरण तरक मीमांस लह्या।
छंद ज्योतिष कोष धरम जाण्या, चवदह विद्या ततचित आण्या।।4।।
वादी जगमांहि हुता जे सहू, विद्या बलि जीता जेण लहू।
आव्यो श्रीवीर तणे पासे, अहंकारी वाद तणी आसे।।5।।
श्रीवीर बोलावे हित देई, इंद्रभूति नाम तेहनो लेई।
जगगुरु मननां संसय भंज्या, श्रीवीर भणी गुरु करि रंज्या।।6।।
जिनमुखथी त्रिपदी मनि आणी, उतपति थिति विपति जगत जाणी।
लघु अरथ सहु संग्रह लीधा, पूरव अंग महुरत में कीधा।।7।।
श्रीवीर जिणे सुरमंत्र दीयो, पुण्यवंत प्रथम गणधर कीयो।
श्री गौतम गौत्रै नाम कह्यो, सुर असुरे मंत्र करी सुलह्यो।।8।।
तप बल करि अष्टापद शिखरी, चढि चौवीस जिननी जात्र करी।
तापस पनरह सय तीन वली, प्रतिबोधी दीष्या रंगरली।।9।।
पात्रे एकणि परमान्न तणे, अक्खीण लबधि करी हरष घणे।
पोषे वलि केवलि पद दीधो, अछतै दातार विरुद लीधो।।10।।
गोतम गुरुनो तप एह सदा, छठ छठ तप पारण करे मुदा।
सेंहथ दीक्षा आपे जेहने, निश्चै केवल उपजे तेहनै।।11।।
मुनिवर पिण भिक्षा भ्रमण समे, श्री गौतम गौतम नाम रमे।
सखरा भोजन अन पान मिले, अंतराय करम सहु दूरि टले।।12।।
जदि श्रीवीरइं शिवगति पामी, थाप्या पाटे गौतमसामी।
इंद्रादिक सघले देव मीली, सिंहासनि बैसाण्या केवली।।13।।
श्री गौतमगुरु नो ध्यान धरे, अडसिधि नवनिधि तस होइ घरे।
सुर असुर सहू देवी देवा, कर जोडि करे अहनिसि सेवा।।14।।
मुख पंकज सरसति सुद्धि तसजी, मानषोत्तर वासणि सहसभुजी।
श्रीदेवी पदमद्रह वसती, श्री गौतम पय सेवे हसती।।15।।
जयवंती देवि जया विजया, नंदा भद्दा पउमा तईया।
सिरि हरि चक्केसरि देवि जुया, सोलस विज्जा देवी सहिया।।16।।
जक्ख सोलह तणो सामी, विंशतिभुज गणपयडी नामी।
सोहम ईसाण विमाण धणी, सेवे गुरुने करि भगति घणी।।17।।

त्रीजे सुरलोक निवास करो, श्री श्रमणभद्र सुरचक्र धरो।
सुर सुमनस पंचम कलप वसे, श्री गौतम चरण कमल विलसे।।18।।
फणिपति चउसठि सुरपत्ति मिलि, जष जक्षणि किन्नर देव वली।
श्री गौतमनी सेवा सारे, इकचित गुरुध्यान सदा धारे।।19।।
सोवनमय पंकज सहस दलै, बैठा सिंहासनि अति विमलै।
जे हृदयकमल गौतम ध्यावे, ते मनवंछित लीला पावे।।20।।
पणवक्खर पहिले पद सोहे, माया बीजे वलि मन मोहे।
श्री अरिहंत ने नमि आराहे, श्री गौतम ने जे चित चाहे।।21।।
तंदुल अक्षित करि भरि थाली, अथवा पीली करि जपमाली।
व्रत करिजे दीवाली दिवसै, गौतम जप करि बारह सहसै।।22।।
गुरु मुखथी जपनी विधि जाणी, जे जाप जपे भवियण प्राणी।
निज सदगुरु वचन प्रमाणकरी, मिथ्यामत संका दूरि हरी।।23।।
मोटा मंदिर उत्तम महिला, गौतम नामै परिघल कमला।
उद्यम बलवंत सदा देही, अतिपंडित सुत वलि सुसनेही।।24।।
षटरस भोजन अति मनगमता, मुषवास तंबोल सुरंग छता।
सुभ भोग संयोग जे सुखदाता, गौतम नामै सगली साता।।25।।
पहिरण पटकूल वसत्र झीणा, दिलमांहि कदे न रहे दीणा।
नव नव नाटक आगलि नाचै, कवियण जण जगत सुजस वाचे।।26।।
दुरजण जण न करे कोइ दखो, पौढा नर नो नित होइ पखो।
महियल मांने मोटा राजा, वाजै घरि नित मंगल वाजा।।27।।
साहण वाहण सज्जन साधी, पालखीहे वर रथ हाथी।
सिंहासण आसण इंद्रकला, सोहै सिर छत्र चमर उजला।।28।।
आभूषण कंचण रतन जड्या, मणि माणिक मोती संगि मढ्या।
भला ऋद्धि को भंडार भर्या, धन धान तणा अंबार धर्या।।29।।
महिमा श्री गौतम स्वामि तणी, जिनमत शिवमत में अछे घणी।
गुण गावे जे प्रह सम ऊठी, सासण देवत सुख द्ये तूठी।।30।।
भवियण जण ने उपगार भणी, ए चउपी गौतमस्वामी तणी।
पाठक श्री लक्ष्मीकीरति कहै, गौतम नामइ सुख लील लहै।।31।।

इति श्री गौतम स्वामी चौपई समाप्ता

'खरतरगच्छ गौरव गाथा'

Open Book Exam का Result

पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित खरतरगच्छ गौरव गाथा पुस्तक पर Open Book Exam का आयोजन श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ दुर्ग चातुर्मास-2016 द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 250 व्यक्तियों की उत्तर पुस्तिका प्राप्त हुई। पूर्णांक 200 में से क्रमशः 195, 194, 193 अंक प्राप्त करके भारती बोथरा-जियागंज, मधु लुंकड़-इचलकरंजी, संगीता बाफना-रायपुर ने प्रथम तीन स्थान प्राप्त किये।

नवपद

'9' ही पद क्यों ?

मणि चरण रज मुनि मनितप्रभसागर

नवपद की अराधना मोक्षमार्ग की उत्कृष्ट उपासना है। इसी साधना ने श्रीपाल–मयणा को जीवन का सर्वश्रेष्ठ वैभव अर्पण किया है। इसी दिव्य साधना से हजारों आत्माओं आत्म कल्याण का पावन पाथेय प्राप्त किया हैं।

:- पद नौ ही क्यों कहे गये ?यह प्रश्न हमारी दिमाग-भूमि की फसल है।

'नवपद' पद होने के संदर्भ में समाधान भी अद्‌भुत है।

'9' का अंक अक्षय है। बड़ा ही चमत्कार और जादू भरा है 9 की संख्या में ! अंक गणित के क्षेत्र में इसका अद्‌भुत महत्त्व और विस्तार है।

'9' अक्षय अंक कैसे ?

इस सवाल का जवाब सीधा–सरल है।

1. नौ का पहाड़ा देखे–

   9=9 1+8=9, 2+7=9, 3+6=9 !

2. 9 का किसी भी संख्या से गुणन करने पर जो फल आता है, उन अंकों का योग भी 9 ही होता है।

   जैसे– 9X2=18 1+8=9

   9X3=27 2+7=9

3. जिस संख्या का जोड़ 9 आता है, उसका किसी भी संख्या से गुणन करने पर जो फलितार्थ आता है, उसका योगफल भी 9 ही लेगा जैसेः–

   531x6=3186 ---- 3+1+8+6=18 ---- 1+8=9

   954x11=10496 ---- 10+4+9+4=27 ---- 2+7=9

4. किसी भी संख्या को मन में धारण करके उसका उल्टा करें। फिर उन्हें परस्पर घटा दे ! उन दोनों के बीच के अन्तर का योगफल भी 9 ही होगा।

   कल्पित संख्या : 59642–24695=34947

   3+4+9+4+7=27 ---- 2+7=9

5. किसी भी संख्या में से उसका योग उस संख्या में से घटाने पर जो फलितार्थ प्रकट होता है, उसे योग भी 9 ही होगा, जैसे–

   813-12= 801---- 8+0+1=9 अथवा 80+1=81---- 8+1=9

6. जैन संस्कृति में नौ के अंक की सदा से प्रधानता रही है। जिस प्रकार नवपद में 9 है, तथैव तत्त्व भी 9 है, ब्रह्मचर्य की मर्यादाएं भी 9 है। ग्रैवेयक देव, लोकान्तिक देव, पुण्य के भेद, चक्रवर्ती की निधियाँ, बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव भी 9–9 है। इस प्रकार नवाँक का जैन–धर्म–ग्रन्थों में विस्तृत साम्राज्य फैला हुआ है।
7. जैन संस्कृति में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में भी नौ के अंक का माहात्म्य है। नवरात्रि की नौ रात्रियाँ कही गयी हैं। दुर्गा के नौ नाम कहे गये हैं।

(छंद–हरिगीत– रत्नाकर पच्चीसी)

नव अंक महिमा का सदा इस लोक में विस्तार है।
नवपद जगत में सर्वदा शुभ सिद्धि का दातार है।
श्री पाल मयणा ध्यान धर मेटी भवोभव क्रन्दना।
शुभ भाव भरकर हम करें, नवपद हृदय से वंदना।।

समाचार दर्शन

बीकानेर चातुर्मास

रेल दादावाडी में जिन मंदिर का खनन मुहूर्त्त व शिलान्यास संपन्न

बीकानेर की सुप्रसिद्ध 400 से भी अधिक वर्ष प्राचीन रेल दादावाडी के नाम ख्याति प्राप्त श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी परिसर में श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर का खात मुहूर्त्त व शिलान्यास समारोह पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से संपन्न हुआ। विधि विधान पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में उनके सानिध्य में संपन्न हुआ। पू. साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा का सानिध्य मिला। विधि विधान हेतु डीसा से विधिकारक सुनील भाई आये थे।

ता. 25 सितम्बर को भूमिपूजन एवं खनन मुहूर्त्त तथा ता. 27 सितम्बर को शिलान्यास समारोह हुआ। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री पन्नालालजी खजांची ने बताया कि ट्रस्ट मंडल द्वारा सर्वसम्मति से जिनमंदिर निर्माण का निर्णय लिया गया। गंगाशहर निवासी श्री केसरीचंदजी झंवरलालजी मनोजजी सेठिया परिवार ने जिन मंदिर निर्माण का संपूर्ण लाभ प्राप्त किया है। उनके करकमलों द्वारा विधि विधान करवाया गया। शिखरबद्ध निर्मित होने वाला यह मंदिर दादावाडी के पास ही बनेगा। इस अवसर पर ट्रस्टीगणों के अलावा समाज के आगेवान लोग उपस्थित थे।

बीकानेर में बाल व बालिका परिषद् की स्थापना

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पावन सानिध्य में पूजनीया साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से खरतरगच्छ बाल परिषद् एवं खरतरगच्छ बालिका परिषद् की स्थापना की गई।

विशाल बोथरा को खरतरगच्छ बाल परिषद् का अध्यक्ष चुना गया। महावीर खजांची सचिव व सिद्धार्थ खजांची को कोषाध्यक्ष चुना गया। कुमारी चित्रा पारख खरतरगच्छ बालिका परिषद् की अध्यक्ष बनी। सचिव पूर्वी पारख तथा दिव्या भूगडी को कोषाध्यक्ष चुना गया।

दोनों ही परिषद् के सभी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई गई।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने फरमाया कि आप सभी शासन व गच्छ के हर कार्य में पूर्ण रूप से समर्पित रहते हुए समाज विकास के कार्य करें।

बीकानेर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 नवम्बर को

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में बीकानेर गंगाशहर के तुलसी विहार कॉलोनी में बन रहे शिखरबद्ध जिन मंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव मिगसर सुदि 7 रविवार ता. 26 नवम्बर 2017 को संपन्न होगा।

ता. 22 सितम्बर को तुलसी विहार संघ की ओर से पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने की भावभरी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने यह शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त उद्घोषणा का लाभ तुलसी विहार जैन श्वेताम्बर पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बसंतजी नवलखा ने लिया था। उद्घोषणा कॉलोनी निर्माता श्री सुमेरमलजी दफ्तरी ने की। जिसे श्रवण कर सकल श्री संघ में परम आनंद व उल्लास का वातावरण छा गया।

यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर का खातमुहूर्त्त व शिलान्यास इसी चातुर्मास में पूज्यश्री की पावन निश्रा में ता. को संपन्न हुआ था।

पालीताना में नवाणुं यात्रा

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ की श्री आदिनाथ कान्ति मणि सामूहिक नवाणुं यात्रा का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

नवाणुं यात्रा का प्रारंभ मिगसर सुदि 15 रविवार ता. 2 दिसम्बर से होगा। माला विधान माघ वदि 11 शुक्रवार ता. 12 जनवरी 2018 को होगा।

यह नवाणुं पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत खरतरगच्छाधिपति श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. पू. प्रियदर्शनाश्रीजी म. पू. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. प्रिय सौम्यांजनाश्रीजी म. पू. प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में संपन्न होगी।

पू. साध्वी प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. के संयम रजत वर्ष के अनुमोदनार्थ तिरपातूर निवासी शा. पन्नालालजी गौतमचंदजी पारसमलजी पुखराजजी कवाड परिवार इस यात्रा के प्रमुख लाभार्थी है। मुख्य लाभार्थी बने हैं– श्री मोतीलालजी गौतमचंदजी संपतराजजी कमलेशकुमारजी झाबक रायपुर एवं बीकानेर निवासी श्री बसंतकुमारजी विजयकुमारजी नवलखा परिवार। इस यात्रा का आयोजन अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति की ओर से किया जा रहा है।

बालोतरा खरतरगच्छ के चुनाव

बालोतरा में जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ मूर्तिपूजक संघ के चुनाव संपन्न हुए।

सर्व सम्मति से हुए चुनाव में श्री महावीरजी चौपड़ा, पुनः अध्यक्ष चुने गये। गुरुभक्त पुरुषोतमजी सेठिया उपाध्यक्ष, श्री धर्मेन्द्रजी चौपड़ा सचिव तथा राजुजी सराफ कोषाध्यक्ष चुने गये।

श्री पुरुषोतमजी सेठिया जहाज मंदिर में ट्रस्टी व बालोतरा केयुप के अध्यक्ष भी है।

ट्रस्ट मंडल को जहाज मंदिर की ओर से खूब-खूब बधाई।

तपस्वी अभिनंदन समारोह

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया गणिनी पदविभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, बीकानेर द्वारा अट्ठाई और उससे उपर के समस्त तपस्वियों का भावभीना अभिनंदन बहुमान किया गया।

चालु सिद्धि तप में 34 उपवास करने वाले तपस्वी श्री मोतीलालजी मुसरफ, सिद्धि तप व सभी तपस्वियों का खरतरगच्छ संघ बीकानेर द्वारा अभिनंदन, रजत मुद्रा आदि द्वारा बहुमान किया गया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने तपस्वियों के भावों की अनुमोदना की।

जैन महासभा की ओर से तपस्वियों का अभिनंदन

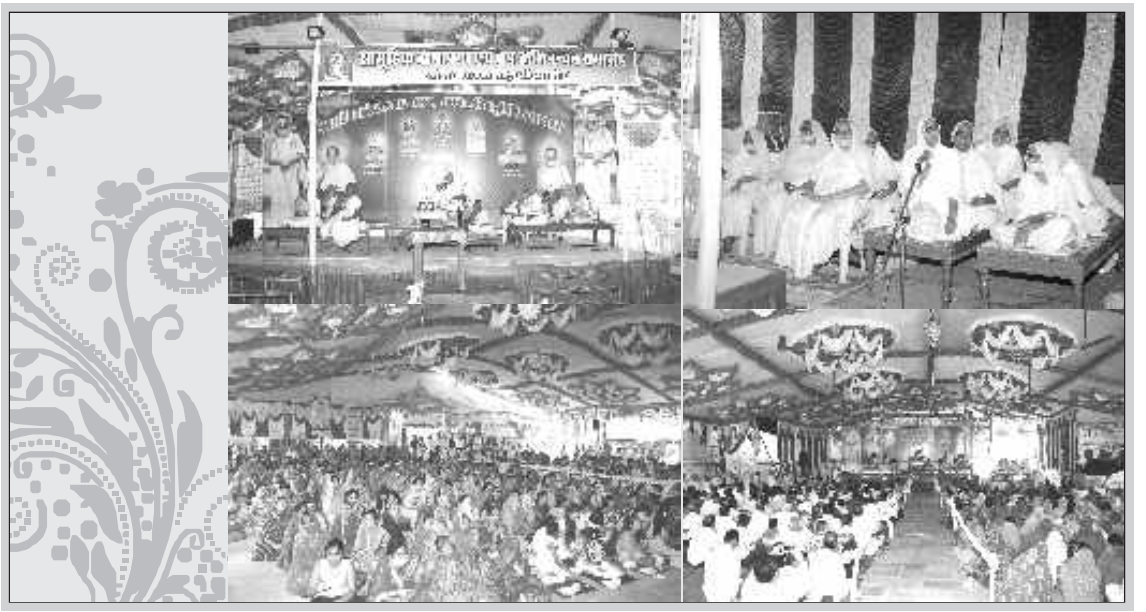

जैन महासभा की ओर से रविवार को जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरिश्वरजी तथा जैन समाज के विभिन्न गच्छ व पंथ के मुनि व साध्वीवृंद के सान्निध्य में सामूहिक क्षमापना व तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। बागड़ी मोहल्ला की ढढ्ढा कोटड़ी में हुए समारोह में खरतरगच्छ संघ, तपागच्छ, पार्श्वचन्द्र गच्छ, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ, साधुमार्गी जैन संघ व हुक्मगच्छीय शांतक्रांत संघ के अट्ठाई से लेकर 33 दिन की तपस्याएं, सिद्धि तप करने वाले श्रावक-श्राविकाओं का जैन महासभा की ओर से अभिनंदन किया गया। सामूहिक क्षमापना व अभिनंदन समारोह में गच्छाधिपति आचार्य श्री ने कहा कि वीतराग परमात्मा की ओर से स्थापित जैन धर्म को जन-जन का धर्म बनाने के लिए जैन महासभा जैसे स्वयं सेवी व सामाजिक संस्थाएं व युवा पीढ़ी समर्पित भाव से कार्य करें। गच्छ, पंथ से ऊपर उठकर जैन धर्म के विस्तार के लिए कार्य करे।

आचार्य श्री ने कहा कि दूसरों की गलतियों को नहीं निकाले तथा क्रोध पर नियंत्रण करें और क्षमा को अपनाएं।

सबके साथ मैत्री व करूणा के भाव रखें। औपचारिक क्षमापना के साथ साथ हृदय के अंतरतम भावों से क्षमा करें। उन्होंने वीतराग परमात्मा महावीर के आदर्शों का स्मरण दिलाते हुए कहा कि अंतरतम से क्षमापना करने से आनन्द मिलता है तथा व्यक्ति अपने आपमें हल्कापन महसूस करता है।

जैन श्वेताम्बर पार्श्वचन्द्र गच्छ के मुनिश्री पुण्यरत्नचन्द्र म.सा. ने एक शेर सुनाते हुए कहा कि क्षमा में नम्रता, सहिष्णुता व उदारता होनी चाहिए। जैन श्वेताम्बर तपागच्छ के पंन्यास प्रवर पुण्डरीकरत्नविजय म.सा. ने कहा कि जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ कल्पसूत्र में व आचार्य श्री हरिभद्रसूरिश्वरजी म.सा. सहित अनेक आचार्यों ने क्षमा के महत्व को उजागर किया है। क्षमा के बिना जीवन अधर्म है। दुर्भावनाएं व कषायों से निवृत्ति के बाद ही मुक्ति मिलती है। जैन श्वेताम्बर पार्श्वचन्द्र गच्छ की साध्वी श्री मरूतप्रभा ने कहा कि प्राणी मात्र के प्रति करूणा, दया व क्षमा की भावना रखे। जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ की साध्वी डॉ. प्रिय श्रद्धांजनाश्री ने कहा कि क्षमा संस्कृति, संस्कार तथा मन की श्रेष्ठ कृति है। क्षमा विश्वास का विधान, नफरत का निदान और अहिंसा का रूप है। जैन श्वेताम्बर तपागच्छ की साध्वी श्री जिनेन्द्रप्रभाश्रीजी ने कहा कि हमें वह व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए, जो हमें अच्छा नहीं लगता। तेरापंथ की साध्वीजी डॉ. परमयशा ने कहा कि आग्रह, दुराग्रह मिटाकर प्रेम व स्नेह के भाव रखे। गंगाशहर सेवा केन्द्र की व्यवस्थापिका साध्वी कमल प्रभा ने कहा कि क्षमा का आभूषण धारण करने वाले की आत्मा निखर जाती है। क्षमा का पर्व आत्म निरीक्षण, सम्यक्त्व की सुरक्षा, अहिंसा, मैत्री व सौहार्द की प्रतिष्ठा का पर्व है। साध्वीश्री सुव्रतयशा, लक्ष्यप्रभा, तेरापंथी सभा के सुरपत बोथरा, पूर्व सरपंच मेघराज सेठिया, श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ के सुरेन्द्र, दिगम्बर जैन समाज के धनेश जैन, जैन श्वेताम्बर पार्श्वचन्द्र गच्छ के तनसुख बांठिया, साधुमार्गी जैन संघ गंगाशहर भीनासर के कमलचंद डागा, हुक्मगच्छीय श्रावक संघ बीकानेर के अशोक श्रीश्रीमाल, श्री अरिहंतमार्गी जैन महासंघ के जयचंद लाल सुखानी, श्री ज्ञानगच्छ श्रावक संघ के कमल बोथरा, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के सचिव शांतिलाल सुराणा, साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के राजेन्द्र गोलेच्छा सहित अनेक वक्ताओं ने क्षमापना पर विचार व्यक्त किए।

समारोह में महापौर नारायण चौपड़ा, जेन महासभा के महामंत्री जतन दुग्गड़ पूर्व अध्यक्ष व महामंत्री लूणकरण छाजेड़, विजय कोचर, चंपकमल सुराणा, जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के इन्द्रमल सुराणा, विभिन्न गच्छ, पंथ व समुदायों की महिला पदाधिकारियों, वरिष्ठ श्रावकों ने तपस्वियों का प्रशस्ति पत्र आदि से अभिनन्दन किया। इस अवसर पर जैन लूणकरण छाजेड़ ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से सामूहिक क्षमा का संकल्प करवाया तथा क्षमापना व अभिनंदन समारोह के महत्व को उजागर किया।

बीकानेर ज्ञान वाटिका

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठज्ञणा एवं पूजनीया साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा द्वारा ज्ञान वाटिका का अनूठा संचालन किया जा रहा है।

इस ज्ञान वाटिका में 125 से अधिक छात्र छात्राऐं संस्कारी ज्ञानाभ्यास कर रहे हैं। ज्ञान वाटिका सुगनजी के उपासरे में पूजनीया साध्वीजी म. के सानिध्य में चलती है। हर रविवार को सामूहिक स्नात्र पूजा व शाम को प्रतिक्रमण का आयोजन होता है। गत रविवार को पेरेण्ट्स मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों ने अपने अनुभव सुनाये। जो सीखा वो पाठ सुनाये। जिसे सुन कर अभिभावक वर्ग अत्यन्त प्रभावित हुआ। सबसे ज्यादा सीखने वाले बच्चों, उपस्थिति वाले बच्चों को विशेष पुरस्कार अर्पण किये गये।

इस ज्ञान वाटिका के प्रथम वर्ष के लाभार्थी श्री थानमलजी बोथरा एवं श्रीमती आशादेवी नेमचंदजी खजांची हैं। श्री मोतीलालजी नरेन्द्रजी राजीवजी खजांची आजीवन सदस्य बने हैं। इनके अलावा वार्षिक सदस्यों ने काफी लाभार्थियों ने लाभ प्राप्त किया है। समारोह का संचालन केयुप महामंत्री मनीष नाहटा ने किया।

उज्जैन में उवसग्गहरं महापूजन सम्पन्न

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री मज्जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. एवं पू. बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की परम पावन निश्रा में कृष्णागिरी शक्ति पीठाधिपति यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय जी म. ने विशुद्ध मंत्रोच्चार के साथ अत्यन्त भक्ति भाव के वातावरण में श्री अवंति पार्श्वनाथ के विशाल प्रांगण में उवसग्गहरं महापूजन पढाया।

इस महापूजन में 108 जोडों को पूजा में बैठने की अनुमती दी गई। जिन्होंने भी पूजन में नाम लिखाया उन्हें महिला वर्ग को हरी साड़ी एवं पुरूष वर्ग को हरी धोती दुपट्टे पहनकर ही पूजा में बैठने की अनुमति थी।

पूजा के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री युक्त विशाल मांडला बनाया गया।

जब सामूहिक स्वर में परम तपस्वी साधक श्री वसंत विजयजी म. ने पूजन प्रारंभ की तो सारा वातारण भक्ति की गंगा में झूम उठा।

मुख्य पीठिका पर बैठकर पूजन का लाभ लिया मोकलसर बैंगलोर निवासी संघवी श्री कुशलराज जी सुरजदेवी गुलेच्छा ने स्मरण रहे श्री गुलेच्छा अखिल भारतीय अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा समिति के संयोजक यतिवर्य श्री वसंत विजय जी म. ने पूजन के बीच उवसग्गहरं की महिमा समझाते हुए इस महापूजन के अनेकों चमत्कार बताये। उपस्थित जनता ने जब श्री वसंत विजय जी म. के मुँह से मंत्रोच्चार सुने तो वह चमत्कृत हो उठी। पूजन में ज्योंहि वरूणदेव का आह्वान किया उन्होंने तुरंत अमीवृष्टि द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज की।

पू. यतिवर्य श्री ने अपनी मीठी राग में जब भक्ति के तराने छोड़े तो सारी जनता झुम उठी।

पूजन के बीच ही प्रतिष्ठा मुहूर्त की घोषणा का चढावा बोला गया। मुहूर्त घोषणा के लाभार्थी बने श्री बाबुलाल जी, संजय कुमार जी, सुनील कुमार जी नाहर परिवार।

लगातार पांच घण्टे चली इस पूजन को देखकर जनता भाव विभोर हो गयी।

यह पूजन अवंति पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा निर्विघ्न एवं अत्यन्त हर्षोल्लास से संपन्न हो इस मंगल कामना से की गई।

इस महापूजन में भक्तिमय संगीत देने के लिए मुंबई से संगीतसम्राट श्री नरेन्द्र वाणीगोता पधारे जनता को संबोधित करते हुए डॉ. श्री बसंत विजय जी म. ने कहा- बहिन म. के आदेश से आज मैं, उज्जैन इस महापूजन हेतू आया हूँ। उन्हें मैं अपनी बहिन मानता हूँ। अत: उनका आदेश मेरे लिए सबसे ज्यादा मुल्यवान् है।

बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म. ने कहा-लगभग एक युग से मैं यतिवर्य श्री को जानती हूँ। उनकी साधना जितनी गहरी है उतनी ही गहरी उनकी आत्मीयता है। कुशल वाटिका बाड़मेर का भूमि शोधन भी आपने ही संपन्न किया था।

संयोजक संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा ने कहा-यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे इस तीर्थ प्रांगण में इतनी सुंदरतम पूजा का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन के पश्चात् ट्रस्ट मंडल द्वारा यतिवर्य श्री वसंत विजयजी म. का शॉल द्वारा सम्मान किया गया। स्मरण रहे अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ का जिणोद्धार प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री मज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में गतिशील है।

इस तीर्थ की प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त लेने के लिए श्री श्वेताम्बर मारवाडी समाज ट्रस्ट के नेतृत्व में उज्जैन का विशाल संघ बीकानेर आचार्य श्री मज्जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म. की सेवा में पहुँच रहा है।

योगोद्वहन संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चार मुनियों व तीन साध्वीजी के सूत्रों के योग संपन्न हुए हैं।

पूज्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. तथा पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. ने आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध के तथा पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पू. साध्वी श्री प्रियशैलांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म. के उत्तराध्ययन सूत्र के योगोद्वहन संपन्न हुए।

आचारांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध के योग अब प्रारंभ होंगे। योगोद्वहन का अनुज्ञा नंदी विधान सुगनजी के उपासरे में चतुर्विध श्री संघ के समक्ष संपन्न हुआ।

कानपुर में शासन प्रभावना

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी गणिनी पद विभूषिता पूजनीया सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म. पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का भव्य चातुर्मास कानपुर नगर में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ विराहना रोड पर अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ चल रहे हैं। पूज्याश्री के प्रवचनों में बडी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होते हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना अभूतपूर्व रही। पूरे चातुर्मास में विविध आयोजन हो रहे हैं। विविध पूजाऐं, महापूजन, शिविर, तत्वज्ञान कक्षाऐं आदि लगाचार चल रही है।

ता. 27 से 29 सितम्बर तक त्रिदिवसीय मां सरस्वती का विधि युक्त जाप अनुष्ठान का भव्य आयोजन किया गया। ता. 30 को अनंत लब्धि निधान गुरु गौतम स्वामी महापूजन का आयोजन किया गया। अठारह अभिषेक का आयोजन संपन्न हुआ।

सूरत में महोत्सव

सूरत जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ शीतलवाडी में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री स्वर्णोदयाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सत्वोदयाश्रीजी म. का चातुर्मास भव्य आयोजनों व प्रवचनों के साथ संपन्न हो रहा है।

पूज्याश्रीजी की निश्रा में पूजनीया महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री अरूणोदयाश्रीजी म. की 12वीं पुण्यतिथि, पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्तिप्रभाश्रीजी म. की प्रथम पुण्यतिथि एवं तपस्वी रत्ना श्री स्वर्णोदयाश्रीजी म. के 12वें लगातार वर्षीतप की आराधना के उपलक्ष्य में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 27 सितम्बर को सामूहिक सामायिक, ता. 28 को सामूहिक स्नात्र महोत्सव, ता. 29 से 31 तक त्रिदिवसीय अर्हद् महापूजन का आयोजन किया गया।

ता. 30 को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। विधिकारक श्री परेशभाई शाह पधारे थे।

बरडिया परिवार में तपस्या की लहर

सूलै, चेन्नई। खरतरगच्छाधिपति प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता प.पू. गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा., प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. एवं हमारी कुलदीपिका प.पू. प्रियविनयांजना श्रीजी म.सा., प.पू. प्रियमंत्रांजना श्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बरडिया परिवार में महावीरचन्द एवं उनकी धर्मपत्नी श्वेता बरडिया ने 31 उपवास (मासक्षमण), मनोजकुमार एवं उनकी धर्मपत्नी रीटा बरडिया ने 11 उपवास, सौ. अंजु बरडिया ने 11 उपवास, दीक्षित कुमार, जिनेश कुमार, लक्षिता कुमारी ने 9 उपवास की तपस्या करके एक नये इतिहास का सर्जन किया है। तपस्या के उपलक्ष्य में भव्य वरघोड़ा ता. 9.8.2017 को हुआ। तत्पश्चात् तपवंदनावली आदिनाथ जैन मंडल मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने सुमधुर शैली में करवाई। पू. पन्यास पद्मचन्द्र विजयजी म.सा. ने फरमाया यह कमलाबाई मदनचन्दजी बरडिया का परिवार धन्य है। दो-दो पुत्रियाँ संयम मार्ग पर अग्रसर हुई हैं, अब तपस्या की बहार आई है। बहुत-बहुत अभिनंदन अनुमोदन है। ता. 10.8.17 को घर पर गुरु भगवंतों के पगलिये हुए बाद में सभी तपस्वियों का पारणा हुआ। पंच परमेष्ठि पूजा और दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई गई।

बडोदरा में त्रिदिवसीय महोत्सव सम्पन्न

बडोदरा में स्थित झाबक भवन में विराजित खरतरगच्छाधिपति प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. महत्तरा पद विभूषिता गुरुवर्या श्री चम्पा श्रीजी म.सा. की शिष्या प.पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा. एवं स्नेह-सुरभि प.पू. श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या प.पू. साध्वी श्री मधुरिमा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की शुभ निश्रा में महत्तरापद विभूषिता प.पू. गुरुवर्या श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 29 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में त्रिदिवसीय महोत्सव संपन्न हुआ।

ता. 4 सितम्बर 2017 को पूज्याश्री का 'गुणानुवाद' एवं पुणिया श्रावक की सामायिक रखी गयी। पुणिया श्रावक बनने का लाभ लिया शाह मनहरलालजी ताराचंदजी पारेख परिवार ने। पू. साध्वी श्री मधुरिमा श्री जी म. ने पुणिया श्रावक की सामायिक के बारे में समझाया कि एक शुद्ध सामायिक से नरक गति टल सकती है। जिससे कई युवाओं ने सामायिक करने का नियम लिया। ता. 5 को महा प्रभावक 'चिंतामणि पार्श्वनाथ' महापुजन रखा गया। पुना से पधारे हुए विधिकारक विराग भाई के द्वारा 55 जोडे सहित पूजन करवाया गया। जिसके लाभार्थी थे सांचोर निवासी शा. राजमलजी वागजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार। ता. 6 को 'दादा गुरुदेव' की पूजा रखी गयी जिसके लाभार्थी उर्वशी बेन दिनेशजी लुक्कड परिवार।

तपस्या के रंग में रंगा खापर श्रीसंघ

महाराष्ट्र राज्य के अक्कलकुवा तहसील में खापर नगर में खरतरगच्छाधिपति प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं महतरा पद विभूषिता खान्देश शिरोमणि प.पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. के आशीर्वाद से प.पू. श्री विरागज्योतिश्रीजी म. सा., प.पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा., प.पू. श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा ठाणा 3 का जब से खापर नगर में प्रवेश हुआ, उस दिन से खापर नगर में तपस्या के फूल खिलने लगे। श्रावण मास के महिने में नगर में सुबह-शाम बरसात का मोसम बना रहता था! लेकिन जिनेश्वर प्रभु की परम कृपा और गुरुवर्या के आशीर्वाद से सभी तपस्वियों के तप और साधना में बाधा आये बिना सभी की तपस्या संपन्न हुई। श्रावण सुदि 13 को सौ. मंगलाबाई सुरेशचंद बोथरा और सौ. सुरेखादेवी नरेशचंद बोथरा इन तपस्वियों ने मासक्षमण की तपस्या पूर्ण की। उन्हीं के साथ 1तपस्वी ने 11 उपवास ओर 29 तपस्वियों ने 9 उपवास की तपस्या कर चातुर्मास में चार चांद लगाया।

तपस्या के अनुमोदना में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ता. 4 अगस्त 2017 को तपस्या की सांझी और रात्रि में भक्ति का रंगारंग आयोजन जिसमें युवा संगीतकार अंकित लोढा रायपुर ने भक्ति की रात को सुहाना बनाया। ता. 5 अगस्त 2017 श्रावण सुदि 13 को सभी तपस्वियों का नगर में भव्य वरघोडा निकाला गया। वरघोडे के पश्चात सभा मंडप में प.पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। अपने प्रवचन में तपस्या का महत्व बताया एवं सभी तपस्वियों के अनुमोदनार्थ गीत प्रस्तुत किया। सभी तपस्वियो का बहुमान श्री संघ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन ललितकुमार जाट ने किया। अनेक तपस्वियों के सिद्धितप, समवसरण तप, ओली, अक्षय निधि तप, कषाय तप जैसे अनेक तपस्या गुरुवर्या श्री के सान्निध्य में चल रहे हैं।

प्रेषक : शुभम गौतमचंद भंसाली, अक्कलकुवा

चालीसगांव में महोत्सव

प.पू गच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. गणिनी पद विभूषिता मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की शुभ निश्रा में महाराष्ट्र के चालीस गाँव में प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपा श्रीजी म.सा. की 29 वीं पुण्यतिथि धूमधाम से निराले ठाठ पूर्वक मनाई गई।

पुण्यतिथि निमित्त रत्नत्रयी महोत्सव का भव्य आयोजन रखा गया।

प्रथम दिवस- प्रवचन के साथ 27 अभिषेक पूर्वक उवसग्गहरं स्तोत्र महापूजन पढाया गया। दूसरे दिन जयतिहुअण स्तोत्र महापूजन पढाया गया। महोत्सव के तीसरे दिन सिद्धाचल तीर्थ की भावयात्रा करवाई गई जो चार घंटे तक लगातार चली।

समारोह में धुलिया, मालेगॉव, जलगॉव, नंदुरबार, दोंडाइचा, चाचेरा, इचलकरंजी, भायंदर, कालपुर, भुज, बेंगलोर इत्यादि अनेक नगरों से संघ गुरु दर्शन के लिए पधारे।

पूज्याश्री ने गुणानुवाद करते हुए कहा- पूजनीया गुरुवर्या श्री चंपा श्रीजी म.सा. विरल विभूति थी। उनके नाम से संकट दूर होते हैं। हमने अनेक बार विहार आदि में इसका अनुभव किया है। आपकी समाधि भूमि पर चम्पावाडी के नाम से स्मारक तीर्थ रूप ख्याति प्राप्त है। चालीस गाँव जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ द्वारा मेहमानों का सादर सम्मान स्वागत किया गया।

कोट्टूर में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया |

ता. 29.7.17 शनिवार को ध्वजारोहण के साथ खरतरगच्छ के इतिहास के संबंध में विवेचना की गई। सामूहिक इकतीसा पाठ, सामूहिक सामायिक आदि का आयोजन किया गया। दोपहर 12 बजे जीवदया का कार्यक्रम किया गया।

ता. 30.7.17 रविवार सुबह 7.30 बजे सामूहिक स्नात्र पूजा 12.30 बजे सामूहिक एकासणा करवाया गया। जिसमें श्री संघ ने बडी संख्या में भाग लिया। यह आयोजन श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाडी ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप) कोटुर शाखा द्वारा किया गया।

के युप मुंबई शाखा द्वारा एक दिवसीय चैत्य परिपाटी का आयोजन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की मुंबई शाखा द्वारा श्री नाकोड़ा धाम तीर्थ, श्री कोस्बाड तीर्थ दादावाडी, श्री नंदीग्राम तीर्थ एवं श्री तलासरी तीर्थ आदि तीर्थो की भव्य एक दिवसीय चैत्य परिपाटी का आयोजन किया गया। इस चैत्य परिपाटी में 250 से अधिक यात्रियों ने दर्शन वंदन सेवा पूजा आदि का लाभ लिया । मुंबई से प्रातः 5.00 बजे प्रारंभ इस यात्रा का प्रथम पड़ाव श्री नाकोड़ा दर्शन धाम तीर्थ था, जहाँ परमात्मा के दर्शन वंदन के बाद नवकारशी की व्यवस्था थी, इसके पश्चात कोस्बाड तीर्थ पहुंचे जहाँ टेकरी पर स्थित परमात्मा मल्लिनाथजी का प्राचीन जिन मंदिर एवं दादावाडी देखते ही सभी यात्री भाव विभोर हो गए, तीर्थ का रमणीय वातावरण सभी के तन मन को आल्हादित कर रहा था, मुंबई शाखा के अध्यक्ष चम्पालाल वाघेला ने सभी महानुभावों का स्वागत किया। सेवा पूजा एवं दोपहर की नवकारशी के पश्चता लाभार्थी परिवार का सम्मान समारोह रखा गया। सम्पूर्ण आयोजन का लाभ श्रीमान शा. सिरेमलजी भीखाजी मरडीया परिवार (सुन्धेश्वर ग्रुप) ने लिया था। परिषद के सदस्यों एवं यात्रियों द्वारा लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया, शाम की नवकारशी का लाभ श्रीमान शा. अनराजजी हरचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया था जिसका आयोजन उमरगाम स्थित उनकी फैक्ट्री पर किया गया, नंदीग्राम तीर्थ दर्शन करते हुए श्री तलासरी तीर्थ में सांय की आरती का लाभ लिया। लाभार्थी परिवार द्वारा समस्त यात्रियों को एक सुंदर किट प्रदान की गयी इस आयोजन में सभी कार्यकार्ताओं का योगदान सराहनीय रहा। सचिव महेन्द्र श्रीश्रीश्रीमाल ने सभी का आभार प्रकट किया।

रिषभ कानुंगो, मुंबई

यात्रा संघ का स्वच्छ भारत अभियान

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री मणिप्रभसुरीश्वर जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद बैंगलोर शाखा द्वारा आयोजित चारों दादावाड़ी एवं राजस्थान के अनेक प्राचीनतम तीर्थों के यात्रा संघ के यात्रियों द्वारा गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में मिरज एवं अनेक रेल्वे स्टेशनों पर स्वच्छ भारत अभियान के तहत लोगों को अपना परिसर एवं शहर को स्वच्छ रखने कि प्रेरणा देते हुए लघु नाटिकाओं का आयोजन किया गया, मिरज स्टेशन मंडल के प्रभारी ने यात्रियों द्वारा आयोजित इस अभियान की भूरी भूरी प्रशंसा की।

युवा परिषद् के अध्यक्ष ललित डाकलिया ने बताया कि इसके पूर्व यात्रा संघ का दिल्ली, मालपुरा, अजमेर, नाकोड़ा, गढसिवाना, मोकलसर एवं माण्डवला में श्रीसंघों एवं युवा परिषद शाखाओं द्वारा भव्यातिभव्य स्वागत किया गया, इसी कड़ी में विशेषतया ब्यावर शहर में श्री खरतरगच्छ संघ द्वारा संघ का स्वागत अभूतपूर्व रहा, जीरावला तीर्थ पर आयोजित संघमाला कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बोथरा, महामंत्री श्री प्रदीप जी श्रीश्रीमाल, श्री चम्पालाल जी वाघेला, श्री पुरुषोत्तम जी सेठिया, श्री गौतमचंदजी मालू, श्री मनीष जी नाहटा, अहमदाबाद से श्री रतनलाल जी बोथरा विपुल भाई एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिती उल्लेखनीय रही। बैंगलोर शाखा द्वारा परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी, दिल्ली, जयपुर, ब्यावर, बालोतरा, पचपदरा, गढसिवाना युवा परिषद् शाखाओं का उनके द्वरा प्रदान की गई सेवाओं के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त किया गया। 400 सदस्यों के यात्रा संघ का अपनी यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न कर बैंगलोर आगमन हुआ।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर अपने दोस्त घटाशंकर के साथ बातचीत कर रहा था। उसका दोस्त दुनिया का रोना रोता हुआ कह रहा था। जमाना बहुत ही खराब आ गया है। दुनिया बहुत ही झूठी और मक्कार हो गई है। कोई सही आदमी नहीं रहा। सब स्वार्थी और बेईमान हो गये हैं।

चिराग लेकर ढूंढोगे तो भी सही आदमी नहीं मिलेगा। एक भी आदमी इस दुनिया में ऐसा नहीं है, तो झूठ न बोलता हो। पहले तो लोग आटे में नमक मिलाते थे, अब तो नमक में आटा मिलाने लगे हैं, वो भी कभी कभी! अन्यथा तो नमक की रोटी ही पकडा देते हैं। लोग इतना झूठ बोलने लग गये हैं।

जटाशंकर बोला— मैं ऐसे एक आदमी को जानता हूँ, जो कभी भी झूठ नहीं बोलता। जिसने बचपन से लेकर आज तक कभी झूठ नहीं बोला और न कभी बोलेगा।

दोस्त घटाशंकर चौंका। आज इस पंचम काल में भी... घोर कलियुग के जमाने में भी ऐसा हरिश्चन्द्र सत्यवादी है, जो झूठ नहीं बोलता। कौन है वो व्यक्ति! अरे! वो तो संत से भी बढ़ कर है। उसके तो दर्शन करने चाहिये। तूं जल्दी बता। कौन है... कहॉ रहता है...! उस आदमी से मैं बात करना चाहता हूँ।

जटाशंकर धीरे से बोला— बात करना संभव नहीं है। क्योंकि वह गूंगा है। इसलिये उसने आज तक कभी झूठ नहीं बोला।

जो बोल ही नहीं सकता है। उसके लिये न सत्य बोलना संभव है, न झूठ बोलना। सत्य और झूठ केवल वचन का गुण नहीं है। वह गुण है ह्रदय का। हृदय का गुण ही महत्वपूर्ण है। मात्रा वचन के गुण की कींमत नहीं है।

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. बीकानेर चातुर्मास की पूर्णाहुति के पश्चात् विक्रमपुर की ओर विहार करेंगे। जहॉ उनकी पावन निश्रा में ता. 15 नवम्बर 2017 को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहॉ से पुनः बीकानेर पधारेंगे। यहॉ उनकी निश्रा में 26 नवम्बर को तुलसी विहार कॉलोनी मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। वहॉ से पूज्यश्री विहार कर नागोर, फलोदी, बालोतरा होते हुए सिणधरी पधारेंगे।

संपर्क— मुकेश प्रजापत— 9825105823

— प्रेषक : मुकेश प्रजापत

।। श्री महावीरस्वामी नमः ।।

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त मणिधारी कुशलचन्द्रसुरी गुरुभ्यो नमः ।।

प्रथम दादागुरुदेव की कर्म भूमि एवं द्वितीय दादा गुरुदेव की जन्म भूमि

श्री विक्रमपुर (बिकमपुर) राजस्थान नगरे नवनिर्मित

२४वें तीर्थंकर श्री महावीरस्वामीजी का जिनालय एवं दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी दादावाड़ी

के भव्य अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

भाव भरा सस्नेह अग्रिम निमंत्रण

-: आज्ञाप्रदाता व निश्रा प्रदाता :-

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

✲ महोत्सव प्रारम्भ ✲	✲ भव्य वरघोड़ा व अंजनशलाका ✲	✲ पावन प्रतिष्ठा ✲
मिगसर वद 10 सोमवार	मिगसर वद 11 मंगलवार	मिगसर वद 12 बुधवार
दि. 13.11.2017	दि. 14.11.2017	दि. 15.11.2017

सम्पूर्ण निर्माण एवं प्रतिष्ठा सहयोगी
रुपये 200001/-
आपके परिवार के 5 नाम शिलालेख
एवं पत्रिका में अंकित होंगे।

✲ निवेदक ✲

श्री जिनदत्तकुशलसुरी खरतरगच्छ पेढी

पालीताणा - अहमदाबाद - चेन्नई

निर्माण एवं प्रतिष्ठा सह सहयोगी
रुपये 100001/-
आपके परिवार के 2 नाम शिलालेख
एवं पत्रिका में अंकित होंगे।

मोहनचंद ढढ्ढा	तेजराज गुलेछा	भंवरलाल छाजेड़	पदमकुमार टाटिया	दीपचन्द बाफणा
संरक्षक एवं संयोजक	अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	महा मंत्री	कोषाध्यक्ष
98410 94728	94483 87442	99670 22183	98408 42148	98250 06235

✲ निकटतम एयरपोर्ट ✲
जोधपुर 210 कि. मी.
(फलोदी एवं बाप होते हुए)

आपके आगमन की सूचना दि. 15 अक्टूबर 2017 तक अवश्य दिरावें।
ताकि उचित व्यवस्था की जा सके।

✲ निकटतम रेल्वे स्टेशन ✲
फलोदी 75 कि. मी.,
बीकानेर 150 कि. मी., नागौर 235 कि. मी.

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

।। श्री स्वर्णगिरि पार्श्वनाथाय नमः ।।
खरतरबिरुदधारक जिनेश्वर सूरिभ्यो नमः

श्री आदिनाथाय
अनंत लब्धिनिधान गौतमस्वामिने नमः
दादा श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र गुरुभ्यो नमः

।। श्री महावीर स्वामिने नमः ।।
गणनायक सुखसागर गुरुभ्यो नमः

अंनत सिद्धों की सिद्धभूमि श्री सिद्धाचल महातीर्थ दादा आदिनाथ सान्निध्ये

श्री आदिनाथ-कान्ति-मणि सामूहिक नव्वाणुं यात्रा

नव्वाणुं प्रारंभ
मिगसर सुदी पूनम
3 दिसम्बर 2017 रविवार

नव्वाणुं यात्रा प्रसंगे

नव्वाणुं माला
माघ वदि एकादशी
12 जनवरी 2018 शुक्रवार

गिरिवर दर्शन विरला पावे

अंतर के आलोक से अविरत अवसर

भावभरा आमंत्रण

आज्ञा प्रदाता
प.पू. स्व. आ. श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा.

पावन निश्रा
प.पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागर जी म.सा.
प.पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागर जी म.सा. आदि ठाणा
प.पू. महत्तरापद विभूषिता दिव्यप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा

प्रेरणा एवं पावन सानिध्य
प.पू. प्र. प्रेमश्री जी म.सा., प.पू. तेजश्रीजी म.सा. की शिष्या
प्रशिष्या प.पू. गच्छगणिनी पार्श्वमणितीर्थ प्रेरिका गुरुवर्या सुलोचना श्री जी म.सा.
प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणा श्री जी म.सा. की शिष्या प.पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा

नव्वाणुं सहयोगी
1,51,000 (एक लाख इक्यावन हजार रुपये)

नव्वाणुं में एकासणा का लाभ
51,000 (इक्यावन हजार रुपये)

प्रमुख लाभार्थी
प.पू. गच्छगणिनी गुरुवर्या श्री सुलोचना श्री जी म.सा. की शिष्या प्रियसौम्यांजना श्री जी म.सा. के 25 वें दीक्षा दिवस के अनुमोदनार्थ
श्रीमान् पन्नालाल जी, गौतमचंद जी, पारसमल जी, पुखराज जी कवाड़ तिरुपात्तुर, सेलम, बैंगलोर

नव्वाणुं यात्रा के मुख्य लाभार्थी
श्री मोतीलाल जी, गौतमचंदजी, सम्पतराज जी, कमलेश कुमार झाबक रायपुर (छ.ग)
श्री बसन्त कुमार जी , विजय कुमार जी नवलखा बीकानेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र

प्रेम सुलेचा चैन्नई (त. नाडू) - 9366610008	विमल संखलेचा, कोप्पल (कर्नाटक) - 9449618611	धैनच लूणिया, अहमदाबाद (गुजरात) - 9426011311	सुनील मुसरफ, बीकानेर (राजस्थान) - 9950169779
ललित मेहता, चैन्नई (त. नाडू) - 7200057533	विरेन्द्र चौरड़िया रायचूर (कर्नाटक) - 9844737672	प्रवीण तातेड़, भिलाई (छ.ग) - 9893627111	कोमल छाजेड़, बाड़मेर (राजस्थान) - 9414269083
लक्ष्मण कवाड़, तिरुपातुर (त. नाडू) - 9486845222	गौतम जी मालू, सूरत (गुजरात) - 9825135775	अंकित लोढ़ा, रायपुर (छ.ग) - 9669884000	विजय संचेती, पुणे (महाराष्ट्र) - 9371146375
कैलाश छाजेड़ बैंगलोर (कर्नाटक) - 9845531007	किशोर शाह, अहमदाबाद (गुजरात) - 9825588020	पंकज बालोटा, हैदराबाद (आ.प्र.) - 9885239226	मोहन संठिया, मुम्बई (महाराष्ट्र) - 9820453339
			मुमुक्षु जैन (साध्वीजी म.सा.) 8160589618

फार्म जमा करवाने का पता Prem jain, Shankhesh Pharma 108, Nyniappa Naichen Street, CHENNAI-600003,
Mob. 9366610008, 9884158780 (sadhakushal99yatra@yahoo.com)

नव्वाणुं स्थलः श्री पन्नारुपा यात्रिक भवन, तलेटी रोड़, पालीताणा — **आयोजक– अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति**

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड़, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408